वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी - 2018

* नया साल सबको मुबारक हो
* महोत्सव मुबारक – 2017
* शुभ संग्राम
* 'टॉक्सिक बिहेवियर' संबंधों के लिए बुरा
* शुभ संग्राम

नया साल सबको मुबारक हो

नया वर्ष सबको मुबारक हो, हमारे शरीर, दिमाग वा विशेष रूप से आत्मा के लिए अधिक से अधिक विकसित करने वाला हो। नया वर्ष आता है और चला जाता है, उसके लिए सारे विश्व में विशेष तैय्यारियां की जाती हैं। बड़ी बड़ी पार्टियां होती हैं, वहां पर शराब वा खाने पीने के जश्न चलते हैं, जिस दिन को हमें बहुत सौम्यता से, सोच विचार से मनाना चाहिए वह पागलों की महफिल बनकर रह जाता है। हम सब सोचें कि हमारी ज़िन्दगी का एक वर्ष और कम हो गया, पिछले वर्ष में हमने अपने शारीरिक, मानसिक वा अध्यात्मिकी विकास के लिए क्या किया? नये वर्ष में बड़े बड़े वायदे किए जाते हैं परन्तु अधिकतर कभी पूरे नहीं होते। हम भी छोटे मोटे वायदे करें ताकि आने वाला वर्ष हमारे विकास का साथी हो: -

1) हम परम पूजनीय भगवान देवात्मा रचित या उनके महान शिष्यों द्वारा लिखित पुस्तकों का नियमित रूप से पाठ करने का दृड़ निश्चय कर सकते हैं, चाहे 2-3 सफे ही पढ़े, परन्तु पढ़ें अवश्य, इससे हम सबको बहुत लाभ वा जाग्रति मिलेगी।

2) हमारे दिल में यदि किसी के लिए कोई गिलाशिकवा है, तो उसको दूर करने की पहल करने का यत्न करें, तो आप देखेंगे कि इससे कितनी शान्ति प्राप्त होगी।

3) छोटी मोटी प्रतिदिन सेवा करने का प्रण लें, गुरू तो हमारे चाहते हैं, कि हम हररोज़ चारों जगतों की सेवा करें। पशु, पक्षियों का दाना डालने, कुछ भौतिक जगत के लिए हमारी सेवा यही है कि साफ सफाई रखें। देव समाजियों के घर दूसरों से अलग दिखने चाहिए। पौधों को पानी डालने वा अपने घर में चाहे चार गमले लगाएं, हमारे घरों में पौधे और फूल अवश्य होने चाहिए। भगवान को पौधों से बेहद प्यार था, वह स्वयं पानी देने, गोडी करने का काम करने लग जाते थे।

इससे आगे किसी ज़रूरत मन्द की तन से वा धन से अपनी हैसीयत के अनुसार सहायता करते रहें।

4) अपने घरों में हमारे अहं वा नीच घृणा से जो कलह कलेश होता है, उस पर विचार करें ताकि आने वाले वर्ष में हम और सुख शान्ति का जीवन बिता सकें।

5) सत्संगों में सहयोग देने का भी प्रण लें, हमारे काम धन्धें हमें बांधे रखते हैं, उनके लिए तो सारा वर्ष होता है, सत्संग साल में कुछ दिन होता है, जब कोई जन आ जाता है, तो उसका भला अवश्य होता है।

इसके भिन्न अपनी ग़ल्तियों, कमियों पर विचार कर उनसे निकलने का, या उनके साथ युद्ध करने का प्रण ले सकते हैं ताकि हम नेकी की ओर बढ़ सकें।

मेरी दिली कामना है कि आने वाला वर्ष हम सबके लिए अधिक से अधिक हमारा विकास करने वाला सिद्ध हो।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 1
जनवरी – 2018
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मानव जगत की अवस्था

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी, संस्थापक देव समाज और देव धर्म का 167वां मुबारक शुभ जन्म महोत्सव देव आश्रम, स्थित देवी नगर, निकट डेराबसी में पिछले वर्षों की तरह बड़े चाव भाव से 2 दिसम्बर से 5 दिसम्बर 2017 तक मनाया गया।

इस पावन पर्व को मनाने के लिए श्रीमान जगदीष जी ने बहुत मेहनत की। हाल को पेंट करवाया गया, कमरों से attached कुछ bathroom बनवाए गए। बैनरज़, नये मौटेज, फोटोज़ हाल में सजाई गई। सफेद चद्रों से बहुत सुन्दर बिछाई की गई। तख़्त पोश, बैंड बाजा, कुर्सियों, लाऊड स्पीकर आदि का प्रबन्ध किया गया। किताबों की स्टाल लगाई गई। चाय, दूध के लिए स्टाल का प्रबन्ध किया गया। पौधों वा लाईटों से सारा सेहन सजाया गया। सारे हाल में सादगी और सुन्दरता की झलक मिलती थी। भगवान की छवि को सुन्दर लाईटों की लड़ियों से सजाया गया। ड्राईवे के दोनों ओर सुन्दर झण्डे लगाए गए। Building के ऊपर बहुत ऊंचे स्थान पर गुरू महाराज का बड़ा विजय पताका शोभयामान था।

महोत्सव पर आने वाले यात्रियों का दृश्य भी बहुत सुन्दर था। चण्डीगढ़, पंचकूला के इलावा, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, यू०पी० आदि स्थानों से यात्री पहुँचे। अमरीका, पंजाब से मोहाली, संगरूर, भंटिडा, कल्याण, गोनियाना – राजस्थान से गंगानगर, पदमपुर, गजसिंहपुर, हरियाणा से, यमुनानगर, मल्लेका, केसूपुरा से पूरी बस, ढाणी, पंचकूला आदि से यात्रीगण पधारे।

यू०पी० से सहारनपुर, मेरठ, देहरादून, लखनऊ आदि स्थानों से यात्री पधारे।

भंटिडा के श्री विनोद कुमार जी (जो श्रीमान चन्द्रगुप्त जी के भतीजे हैं) संगीतज्ञ हैं, वह 3 दिसम्बर की सुबह अपने तबला मास्टर के साथ पहुँच गए थे। वह महोत्सव की सब सभाओं में और विशेषकर विशेष दिन के अवसर पर विशेष भजनों का गान करके बहुत अच्छा मण्डल बनाते रहे। जिस स्नेह और श्रद्धा और अपनेपन से उन्होंने सारा योगदान दिया उसके लिए हम उनके और विशेष रूप से चन्द्रगुप्त जी के, जिनके कारण यह सब सम्भव हो सका, अपना हार्दिक आभार और प्रशंसा का प्रकाश करते हैं।

देव आश्रम डेरा बस्सी

प्रवेश सभा : 4.30 सायंकाल, 2 दिसम्बर 2017:- सभापति श्रीमान डा० सी.एस. जैरथ जी। सभापति जी ने सब आए हुए धर्म सम्बन्धियों को प्रणाम किया और इस 167वें महोत्सव पर पधारने पर हृदय के गहरे भावों के साथ धन्यवाद दिया और कहा आप सब बहुत भाग्यशाली हैं। क्योंकि आपको भगवान देवात्मा का संदेश और उनका दर प्राप्त हुआ है। और हम देव गुरू भगवान के श्री चरणों में हृदयगत भावों से प्रार्थना करते हैं कि आप सबका यहां आना सफल हो। उन्होंने आगे फरमाया कि आमतौर पर जब हम अपने सगे सम्बन्धियों व पारिवारिक जनों का जनमदिन मनाते हैं तो खुशी का इज़हार करते हैं, उपहार देते हैं, और उनको भी महसूस होता है कि हमारा उनके साथ बहुत करीबी सम्बन्ध है। तो क्या हमारा भगवान का जन्म महोत्सव मनाना भी ऐसी ही एक समान्य परिक्रिया है या खास परिक्रया है या उससे भी बहुत बढ़कर है। यह हमें बार बार विचार करने व मनन व महसूस करने की ज़रूरत है।

सभापति जी ने आगे फरमाया कि हम सब दूर दूर से कड़ी सर्दी में अपने सब काम धन्धे छोड़कर यहां पधारे हैं और मैं सबको हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ और सबको जी आइयां कहता हूँ और श्री भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप सबका यहां आना सफल हो। आप सबको भगवान देव आत्मा के देव प्रभाव मिलें और आप सब अपने अपने जीवन को सफल बनाएं और आप सबके लिए यह महोत्सव लाभकारी व कल्याण कारी हो और देव प्रभावों को पाने के लिए हर प्रकार से तन मन व धन से योग दान देकर इस महोत्सव को सफल बनाएं।

उन्होंने आगे कहा कि इन आने वाले 3 दिनों में अमृत वर्षा होने वाली है हमें बड़ों के अमृत वचन सुनने को मिलेंगे। अपने अपने हृदय को सरस बनाएं, हितकर बातचीत करें, किसी की निन्दा चुगली से बचें और दूसरो के गुणों को देखने की कोशिश करें और उनका गुण चिन्तन करें। उन्होंने आगे अपने श्रद्धेय पिता जी डा० गंगा सिंह जी के जीवन के कुछ वृतांत बता कर उच्च जीवन के लाभों और फलों का वर्णन किया। और बताया कि अच्छे भावों की एक खासीयत है कि जब हम बिना स्वार्थ के उच्च भावों के साथ कोई अच्छा काम करते हैं तो उसके साथ साथ दूसरे उच्च भावों को भी पनपने का मौका मिल जाता है और हमारा आत्मा भी और बलवान बनता है। हमें भगवान के देव प्रभावों को पाना है और अडम्बरों व क्रिया कलापों से उपर उठकर हृदय से भगवान के साथ श्रद्धा के सूत्र से बन्धना है। उनके उपकारों को बार बार याद करने की जरूरत है वह हमारे परम हितकर्ता है। सबसे बड़कर धर्म सम्बन्धियों उनके संदेश को दूसरों तक पहुँचाने की जरूरत है और उसके लिए हम हर सम्भव कोशिश करेंगे। हम सब दीन होकर मिलकर देव गुरू के श्री चरणों में प्रार्थना करें कि हमारा यहां आकर और मिल कर जन्म महोत्सव मनाना सफल हो और मेरा और अन्य सबका भला हो। धन्यवाद के सहित उन्होंने अपना ब्यान समाप्त किया।

<u>दूसरा दिन – 3 दिसम्बर प्रात 9:30 बजे। सभापति श्रीमान बलबहादुर जी।</u> विषय: परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवन दायक सम्बन्ध।

सभापति जी ने इस महोत्सव की सफलता के लिय भगवान के श्री चरणों में सहाय प्रार्थना की। इसके बाद भजनों का गान हुआ।

सभापति जी ने फरमाया कि भौतिक जगत के साथ हमारा कितना घनिष्ट सम्बन्ध है। मनुष्य हवा पानी के बिना थोड़ी देर के लिए भी जिन्दा नहीं रह सकता। यह भौतिक पदार्थ हमारे लिये जीवन दायक हैं, परम अवश्यक हैं। इसी प्रकार पौधों खाद्य पदार्थो के बिना भी मनुष्य बहुत दिनों तक जीवित नहीं रह सकता। उन्होंने कुछ घटनाएं बताकर इस तथ्य की पुष्टि की। उन्होंने आगे बताया कि हम मनुष्य आम तौर पर इस तथ्य से अनभिज्ञ हैं कि हमारे शरीर के साथ साथ हमारी जीवनी शक्ति मुख्य वस्तु है। हम जीवन रखते हुए भी इस तथ्य से अनभिज्ञ रहते हैं। हमें जीवन दायक और जीवन विनाशक वस्तुओं व क्रियाओं में अन्तर करना आना चाहिए। श्रीमान जी ने दूसरे धर्मों में प्रचलित विनाशकारी प्रयासों का उल्लेख किया। उनको पता ही नही चलता कि वह जीवन का विनाश करने वाली प्रथाएं हैं। वह उन्हें ही धर्म की संज्ञा दे देते हैं। हमारी नीच घृणाएं हमारा नाश करती हैं और पता ही नहीं चलता। क्योंकि हम अपनी आत्मा व जीवनी शक्ति के बारे में बिलकुल अन्धकार में रहते हैं। भगवान ने इस तथ्य की सत्यता को उजागर किया कि हमारे भीतर हमारी आत्मा ही मुख्य वस्तु है और उसकी रक्षा और विकास भगवान देवात्मा के सम्बन्ध के बिना नही हो सकता। इसलिए यह परम आवश्यक सम्बन्ध है।

उन्होंने आगे कहा कि हमारा भगवान का जन्म महोत्सव मनाना वास्तव में देव प्रभावों को पाना होता है। यह नीच भाव जो हमारे अन्दर हैं उनको जानने वा पहचानने की जरूरत है। जिनसे हमारी आत्मा व हमारी जीवनी शक्ति का नाश होता है और उच्च भावों के लाभों से हमारी जीवनी शक्ति का विकास होता है और उच्च भावों के लाभों से हमारी जीवनी शक्ति बलवान होती है इस सत्य को आत्मसात करने की जरूरत है। और यह आत्मिक अन्धकार, मनुष्य भगवान के देव प्रभावों को पाए बिना दूर नही कर सकता और उसे उच्च जीवन की प्राप्ति नहीं हो सकती।

इसके बाद विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिह जी ने फरमाया कि हम सब छोटी छोटी बुरी बातों को छोड़ने को ही धर्म जीवन व उच्च जीवन समझते हैं। लेकिन सबसे कीमती वस्तु हमारी जीवनी शक्ति व आत्मा है उसको कौन बताएगा व दिखाएगा? देव आत्मा के साथ हमारा जीवन्त सम्बन्ध, हमारी जीवनी शक्ति के विषय में बताने वाला और उसे बचाने वाला है। भगवान के आर्विभाव से पहले कोई बता ही नहीं सकता था, दिखा नहीं सकता था। बिना भगवान देवात्मा के मनुष्य पागल है क्योंकि वह हर ऐसा काम करता है जो उसको व उसकी जीवनी शक्ति को मारने वाला होता है। और यह सत्य भगवान की देव ज्योति के बिना नहीं दिख सकता। उसके लिये हमें देव आत्मा के साथ सम्बन्ध सूत्र के जुडने की जरूरत है। इसी लिये यह परम आवश्यक सम्बन्ध है। उच्च भावों को

पैदा करने की शक्ति भी हमें भगवान से ही मिलती है, लेकिन हमारे अन्दर कृतज्ञता का भाव नहीं है। उसे पैदा करने के लिये संगत की जरूरत है। भगवान से सम्बन्ध महसूस करने की जरूरत है। भगवान के सेवकों व श्रद्धावनों ने जिनकी छवि इस हाल में लगी हुई है और दूसरे सेवकों ने भी इस सत्य को, इस तथ्य को महसूस किया है और उनमें बहुत उच्च कोटि के आश्चर्य जनक परिवर्तन आए और उनका उच्च जीवन में विकास हुआ है।

यह सभा बहुत प्रभाव दायक वा भगवान देवात्मा के सम्बन्ध के महत्व को दिखाने वाली अनुभव हो रही थी।

सांयकाल 4:00 बजे, 3 दिसम्बर 2017 पलिब्क लेक्चर।

श्रीमान डी०एस० चौहान जी। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी सभापति जी ने वक्ता श्रीमान धर्म सिंह जी का परिचय कराया। उनके मानसिक और अध्यात्मिक गुणों का संक्षेप वर्णन किया।

विषय:- **सत्य धर्म और सम्बन्ध।** भजन के गान के बाद श्रीमान धर्म सिंह जी ने बयान किया कि जब हम अपने हृदय को भगवान के साथ जोड़ते है तो हम उनके प्रभावों को पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि भगवान देवात्मा के देव प्रभावों को पाने से पहले उन्होंने आर्य समाज में रहते हुए सब वेदों का व गीता का पाठ किया और दूसरे ग्रन्थों का भी पाठ किया। वह उनमें विश्वास करते थे जैसे कि पुर्नजन्म का चक्कर और उससे छुटकारा पाने की विधियां आदि आदि। लेकिन नीच जीवन के बारे में कोई भी सच्ची शिक्षा नहीं देते हैं। देव धर्म की शिक्षा पाने के बाद उन्हें पता चला कि नीच जीवन क्या होता है। मैं शराबी, मासाहारी अपने आप को धर्मवान समझता था। पापों के निराकरण के बहुत असान वा सस्ते रास्ते बताए गये हैं। स्नान व दूसरे अनुष्ठान, जिससे मनुष्य के सब पाप धुल जाते हैं आदि आदि। दुनिया में लगभग सभी लडाईयां इन धर्मों के कारण हुई हैं और हो रही हैं। श्रीमान जी ने आगे बताया कि भगवान देवात्मा के आर्विभाव के बाद ही मनुष्य जाति के सामने यह सत्य भगवान ने उजागर किया Science और धर्म एक दूसरे के पूरक है इसलिए उन्होंने देव धर्म की (science grounded religion) की स्थापना की। इसमें प्रवेश करने के लिये भगवान ने प्रतिज्ञाएं रखी। लेकिन भगवान ने बताया कि सिर्फ इन प्रतिज्ञाओं के पालन से मनुष्य ध र्मवान नहीं बन जाता। यह तो सिर्फ धर्म जीवन की शुरूआत है। अच्छा काम करके भी कई बार मनुष्य का घमंड बढ़ जाता है। उन्होंने आगे बताया कि मनुष्य का सम्बन्धों में अन्मेल का सबसे बड़ा कारण उसका नीच जीवन है। वह अपने नीच सुखों की प्राप्ति के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। चारों जगतो में मनुष्य ने अपनी नीच गतियों के द्वारा हाहाकार मचाया हुआ है। इनसे उद्धार पाने के लिये मनुष्यों के सम्बन्धों में पवित्रता व शुक्रगुजारी के भाव का होना जरूरी है। उन्होंने घटनाएं बताकर विस्तार से इन तथ्यों का वर्णन किया। इसके बाद उन्होंने ने बताया कि भगवान ने फरमाया है कि केवल अधिकारी आत्मा ही उनकी शिक्षा को ग्रहण कर अपना भला कर सकते हैं और मनुष्य एक आदर्श जीवन जी सकता है। इसके बाद सभापति जी ने और श्रीमान बलदेव सिंह जी ने आदरणीय वक्ता का बहुत बहुत धन्यवाद कर सभा

को समाप्त किया।

तीसरी सभा: संगीत सभा: 3 – 12 – 2017 सायंकाल 7:30 बजे। इसमे श्रद्धावानों ने विविध भजनों का गान कर अपनी अपनी शद्धा का प्रकाश किया और सुनने वाले धर्म सम्बन्धियों को निहाल किया।

4 दिसम्बर 2017, सोमवार (महोत्सव विशेष दिन) 6:30 बजे प्रात: सब धर्म सम्बन्धियों ने इक्ट्ठे हो कर भगवान की स्तुति में भजनों का गान किया और भगवान देवात्मा के शुभजन्म के समय पर बहुत जोश के साथ जय ध्वनि कर जय घोष किया उसके वाद सबने भगवान की छवि के आगे प्रणाम कर सुन्दर हारों से अर्चन किया।

4 दिसम्बर 2017, पहली सभा : 9.00 बजे सुबह। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। विषय – भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता। धन और जन की अपील।

भजन: – "अद्वितीय जीवत व्रतधारी, अद्वितीय महिमा है तुम्हारी" भजन का गान श्री विनोद जी ने बहुत सुन्दर सुर ताल वा भावों से किया। उस के बाद सभापति जी ने फरमाया कि भगवान देवात्मा को कुछ हद तक जानना और उनके श्री चरणों से जुड़ना – इससे बढ़कर और कोई सौभाग्य नहीं है। और उनको न जानना और उनके साथ न जुड़ना सबसे बड़ा दुर्भाग्य है। नेचर के विकास क्रम को जाने बिना मनुष्य भगवान की शिक्षा को नहीं समझ सकते। सभापति जी ने संक्षेप में नेचर के भौतिक, वनस्पति, पशु और मनुष्य की उत्पत्ति व विकास के बारे में बताया। मनुष्य समाज में भी बहुत विकास हुआ है और हो रहा है। मनुष्यों में आगे चलकर सात्विक भाव धारी भी पैदा हुए हैं जो दूसरों के दु:ख निवारण के भाव रखते थे। इसके सम्बन्ध में सभापति जी ने गुरू नानक, Christ, कबीर, राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर आदि के जीवनों से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन किया।

सभापति जी ने बताया कि मनुष्य की प्रकृति सुख अनुरागी है और उसके सुख की पूर्ति में कोई भी इसके आड़े आता है तो वह अपनी व उसकी हानि करने के लिये तैयार रहता है। लेकिन नेचर के विकास क्रम ने एक ऐसी छलांग लगाई कि एक ऐसी आत्मा का आर्विभाव हुआ कि जिसमें मनुष्य का विकास अपनी चर्म सीमा तक पहुँच गया। जिसमें सत्य और शुभ के लिये पूर्ण अनुराग विकसित हो गए। भगवान देवात्मा के अन्दर सत्य और शुभ के अनुराग के 8 अंग विकसित हुए और उसके उल्ट अशुभ व असत्य के प्रति पूर्ण घृणा पैदा हुई।

इसके विपरीत मनुष्य सुख अनुरागी है और इस भाव से परिचालित होकर उसका मोह, मिथ्या, पाप, ग्रस्त जीवन जीना लाजमी है। मनुष्यों को उसके सुखों के प्यार चलाते हैं। हमें सुख के भाव बहुत प्यारे लगते हैं और जो सुख का अनुराग सबसे ज्यादा होता है, मनुष्य उसकी पूर्ति लिए हर सम्भव कोशिश करता है। लेकिन भगवान के अन्दर सत्य और शुभ का पूर्ण अनुराग होने के कारण उनसे परिचालित होकर उनका सत्य और शुभ का राज लाने का लक्ष्य बन जाना लाजमी था। सत्य और शुभ के अनुराग ने भगवान के अन्दर एक अन्दोलन सा पैदा कर दिया कि मनुष्य को

मिथ्या से बचाना और उसके द्वारा उसको नीच जीवन से छुटकारा दिलाना है। भगवान मिस मेरी कारपेंटर और बुद्ध के जीवन से बहुत प्रभावित हुए और उनका पर हित का भाव और प्रबल हो गया और उन्होंने 15 दिसम्बर 1882 को अपना त्याग पत्र देकर अपने आप को दूसरों की भलाई के लिये पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। जीवन ग्रहण करने के बाद भगवान ने फरमाया था कि इस जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद उन्होंने अर्पूव आनन्द की लहरों को महसूस किया। लेकिन इसके बाद उनकी विरोधता की आग चारों तरफ फैलने लगी क्योंकि मनुष्य अपने आप को सदा ठीक समझता है उसे अपने आप से प्यार है उसको उसके विश्वासों पर अन्धी श्रद्धा है। उसका अहं उसको दूसरों के विचारों को घृणा की दृष्टि से देखना लाजमी बना देता है। सभापति जी ने इसके आगे भगवान की उनके विरोधियों द्वारा उत्पीड़न की घटनाओं का ब्यान किया।

भगवान ने अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये 1887 में देव समाज की स्थापना की और अपने मिशन के कार्य को आगे बढ़ाया 1892 में भगवान ने वार्षिक उत्सव मनाया।

सभापति जी ने आगे बताया कि कैसे विरोधियों ने उनको तड़पाया, उनकी सेहत बहुत खराब हो गई और कई कई बार तो वह मृत्यु के द्वार तक पहुंच गये थे लेकिन भगवान इन सब अजाबों से बाहर निकल कर और नई ज्योति और तेज की शक्ति लेकर अपने अद्वितीय कारज में लग गये। उन्होंने कभी भी अपने विरोधियों के प्रति घृणा का प्रकाश नहीं किया वह घृणा के भाव से रहित थे। चन्दा सिंह व मन्साराम से सम्बधित घटनाओं का वर्णन किया। भगवान ने हम मनुष्यों के जीवनों को बचाने के लिये अपना सारा जीवन लगा दिया अपने आप को तिल तिल कुर्बान कर दिया। हमें भी भगवान के मिशन के लिए अपने आप को सर्मपित करने की जरूरत है। सभापति जी ने सबसे अपील की वह ज्यादा से ज्यादा सत्संग में भाग लें और अपना भला करें इसके बाद उन्होंने जन धन की अपील की।

उनकी अपील के रिसपौंस में बहुत से जनों ने संगरूर और कल्याण के सत्संग में शामिल होने का वायदा किया। एक जन ने स्टेज पर आकर बताया कि मैं ढ़ाई महीने से शराब पीने से बचा हुआ हूं और कल्याण सत्संग तक तकरीबन ढ़ाई महीने और बचने की प्रतिज्ञा करता हूं।

आगे दानी जनों की लिस्ट दे रहे हैं।

1)	श्रीमान बलदेव सिंह जी और family	1,30,000
2)	चमन लाल जी	37,500
3)	डा० विनोद जी खेड़ा	20,000
4)	डा० जैरथ जी	10,000
5)	श्रीमान दूनी चन्द जी	5000
6)	श्रीमान मदान साहिब चण्डीगढ़	5000
7)	श्री चन्द्रगुप्त जी अम्बाला	4000
8)	भरपूर कौर जी U.S.A.	4000
9)	श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना	3100
10)	श्रीमान खेम चन्द जी	3000
11)	श्रीमान सुभाष जी पंचकूला	2100
12)	श्रीमान सीता राम जी का परिवार	3000
13)	अशोका जी अम्बाला	2000
14)	श्रीमान बलबहादुर सिंह जी	2000

15)	श्रीमाती अमरजीत जी बराड़	2000
16)	प्रिंसीपल दिवान जी गंगा नगर	1500
17)	श्रीमान बी.पी. सिंह जी गंगानगर	1100
18)	श्री P.C. Aggarwal	1000
19)	ज्ञान चन्द जी गोनियाना	1000
20)	श्रीमान हरबंस लाल जी गोनियाना	1000
21)	श्रीमान सुन्दर लाल जी मल्लेका	600
22)	श्री बलदेव सिंह जी मल्लेका	500
23)	श्री अजीत सिंह जी मल्लेका	500
24)	श्री हेमन्त कुमार जी गंगानगर	500
25)	श्री सुखदेव सिंह जी केसूपुरा	500
26)	प्रिंसीपल सरताज सिंह जी केसूपुरा	500
27)	श्री राम चन्द्र जी केसूपुरा	500
28)	श्री सुरेन्द्र शर्मा	500
29)	श्री सुखदेव जी गोनियाना	500
30)	श्रीमान नरेन्द्र कुमार जी चौधरी	1000
31)	श्रीमान हरदेव जी मल्लेका	500
32)	श्रीमान तेज राम जी	500
33)	वीरपाल (समराला)	1000
	दान जो सभा में इकट्ठा हुआ	8100
	अनुष्ठान दान	2500
	किताबों की बिक्री	2600
	Total दान	2,25,650
	नियत दान	28,700
	धर्म जीवन	2500
	हितस्त्रोत	1750
	भेंट फंड	2525
	कुल दान	**3 ,05,23 5**

शाम 4 बजे पब्लिक लैक्चर वक्ता डा० विनोद जी खेड़ा, सभापति डा० जैरथ जी। विषय :- अन्धेरा और रोशनी। सर्वप्रथम सभापति जी ने डा० विनोद जी खेड़ा का संक्षिप्त परिचय दिया और उन्हें लैक्चर के लिए अमन्त्रित किया।

अंधेरा और रोशनी महोत्सव के विशेष दिन पब्लिक लैकचर देते हुए डॉक्टर विनोद खेड़ा ने इस गंभीर विषय को भगवान देवात्मा के लेख और उपदेश नामी पुस्तक की सहायता से बहुत सरल ढंग से समझाया जिस से सारे श्रोतागण बहुत प्रभवित हुए और बहुत सी लाभदायक बातें सीख कर गए। डॉक्टर खेड़ा ने बताया कि अंधेरे को हम रोशनी का अभाव भी कह सकते हैं।

हम चार प्रकार के अंधेरे और चार ही प्रकार की रोशनी की बात करेंगे। बाहरी ठीक आँखें होने तथा सूरज की या कोई और भौतिक रोशनी की वर्तमानता में हमें जो चीज़ जैसी है वैसी ही दिखाई पड़ती है। यदि किसी के आँखें न हों या फिर रोशनी गायब हो तो मनुष्य केवल अपनी अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करके इन्हीं वस्तुओं को कुछ का कुछ बोलेगा। यह ज्योति लगभग सारी मानवता को प्राप्त है।

दूसरी रोशनी: डॉक्टर खेड़ा ने मानसिक आँखों का न होना और मानसिक अंधेरे के दृश्य को एक जीती जागती मिसाल से प्रस्तुत किया। विशालकाय हाथियों को बिना किसी पिंजरे के बिना मजबूत जंजीरों के अगली टांग पर एक पतली सी रस्सी से बांधकर काबू कर लेने का उदाहरण दिया। मानसिक तौर पर अंधे हाथी बचपन से ही यह मान लेते हैं कि वे इस

पतली सी रस्सी को तुड़ा नहीं सकते। इसी प्रकार मानवता भी अपने अपने अंध विश्वासों से बंधे हुए होने के कारण एक या दूसरे पहलू में गुलामी का जीवन व्यतीत कर रही है।

दुनिया भर के आतंकवादी क्या कर रहे है? दिमागी ज्योति के न होने या मानसिक अंधेपन का इस से बड़ा क्या उदाहरण होगा कि एक ही मुस्लिम धर्म के दो संप्रदाय शिया और सुन्नी एक दूसरे के खिलाफ क्या कुछ नहीं कर रहे, उस से कौन वाकिफ नहीं? ऐसे ही ईसाई धर्म के protestant और catholic अनुयायियों में सैंकडों वर्षों तक युद्ध छिड़ा रहा।

मानसिक ज्योति मानसिक शक्तियों के उन्नत होने से पैदा होती है। इस मानसिक ज्योति से एक एक जन जो कुछ देखता है वह उससे खाली जन बिलकुल नहीं देख सकता। मनुष्य की मानसिक शक्तियाँ जितनी उन्नत होती हैं, वह उतनी ही सच्चाई देख सकता है। यह ज्योति भौतिक ज्योति से बहुत दुर्लभ है और मानवता के एक सीमित भाग को ही बहुत सीमित मात्रा में प्राप्त है। इसीलिए विज्ञान की पर्याप्त उन्नति के बिना सच्चाई और झूठ के बीच के अंतर की सच्ची परख और कसौटी मनुष्य को उपलब्ध ही नहीं थी। विज्ञान के सिद्धांतों को प्रयोग न कर सकने के कारण दुनिया के सभी कल्पना मूलक मत - मतांतर इस बहुत बड़ी मानसिक कमी का शिकार हैं, तभी तो उनकी शिक्षा विज्ञान मूलक सच्चाईयों के विरुद्ध पाई जाती है।

डॉक्टर खेड़ा ने साधारण इन्सानों में इस मानसिक ज्योति से ऊपर एक और ज्योति का वर्णन किया जिसे हम सात्विक ज्योति कहते हैं। यह विशेष ज्योति मानवता में अत्यधिक सीमित रूप से टावां - टांवां ही दिखाई पड़ती है। इस ज्योति को पाकर एक एक व्यक्ति किसी एक या दूसरे बुरे काम को या बुरे रिवाज को बुरे रूप में देखता और दिल से महसूस करता है और किसी भले काम को भले रूप में देखता और महसूस करता है। सात्विक शक्तियां रखने वाला व्यक्ति अपने सात्विक भावों की तृप्ति के लिए हर त्याग ग्रहण करने के लिए स्वयं को मजबूर पाता है।

उदाहरण के तौर पर डॉक्टर खेड़ा ने कुछ ऐसी महान सात्विक हस्तियों का ज़िकर किया। जिनमें हमदर्दी की सात्विक शक्ति प्रबल रूप से आई थी। सती प्रथा को दूर करने के लिए Raja Ram Mohan Rai, ने क्या कुछ कुर्बानी नहीं दी? इसी प्रकार Miss Mary Carpenter, Florence Nightingale, Father Damien, पंजाब के Bhagat Pooran Singh इस सात्विक ज्योति प्राप्त हस्तियों की लिस्ट में आते हैं।

डॉक्टर खेड़ा ने कहा कि हम खुद ही देखें कि हमारे सवा सौ करोड़ देशवासियों में से कितने ऐसे इंसान हैं जो राजा राम मोहन रॉय तथा Miss Mary Carpenter की तरह किसी उच्च लक्ष्य के लिए अपने जीवन कुर्बान करते हैं और अपनी जी जान की बाज़ी लगा देते हैं। सात्विक शक्तियाँ रखने वाले जन बेशक गिनती में बेहद कम हैं पर वे सचमुच हमारी श्रद्धा एवं सम्मान के पात्र हैं।

प्रकृति के विकास की गाथा सात्विक शक्तियों वाले कुछ थोड़े से इंसान पैदा कर देने पर ही समाप्त नहीं हो जाती। कहते हैं न और बिलकुल सच कहते हैं कि "सितारों से आगे जहां और भी है।" इसी प्रकार

सात्विक शक्तियों से आगे एक बिलकुल नया संसार और भी है जिसे हम सच्चाई और भलाई की अथाह प्रेम शक्तियों और झूठ और बुराई के लिए अथाह घृणा शक्तियों का सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय संसार कह सकते हैं। इस प्रकार इस पृथ्वी पर एक नए युग का शुभारंभ हुआ।

सत्य और शुभ के पूर्णांग अनुराग और मिथ्या और अशुभ के प्रति वैराग शक्तियों से विभूषित परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 20 दिसम्बर 1850 या पौषवदी प्रतिपदा अर्थात् आज से 167 वर्ष पूर्व आविर्भाव हुआ जो कि नेचर की विकासकारी शक्त्यिों का एक आश्यर्चजनक करिश्मा था। यह शक्तियों पूरे संसार में पहली बार प्रगट हुई।

विश्व में किसी भी शक्ति को हम अपनी आँखों से देख नहीं सकते बल्कि इनकी पहचान इनके द्वारा क्रिया से होती है। जैसे भाप की शक्ति, बिजली की शक्ति, चुंबक की शक्ति, एटम और एटम बम्ब की शक्ति। इन सबकी वर्तमानता इनके प्रभाव से ही पता लगाई जा सकती है।

इसी प्रकार भगवान देवात्मा की देव शक्तियों की पहचान भी इन के द्वारा किए जा रहे करिश्मे पर करिश्मे पैदा करने से होती है।

इस देव ज्योति को पाकर एक एक इंसान को जो कुछ दिखई देता है, वह उसके बिना उसे दिखाई नहीं दे सकता। उसे अपना असल स्वभाव वा रूप दिखाई देता है। इस विलक्षण ज्योति में उसे यह साफ ज्ञान हो जाता है कि आत्मा अनेक शक्तियों से बना हुआ संगठित या organized समूह है। इसे हम जीवनी शक्ति का नाम भी दे सकते हैं। आत्मा के विषय में विज्ञान के युग में अभी भी अत्यंत गहरा अंधेरा है। अंधेरा हमेशा दुख, हानि और विनाश का कारण बनता है। चाहे वह अंधेरा भौतिक हो या मानसिक या फिर सात्विक।

डॉक्टर खेड़ा ने मनुष्य के आत्मा के भीतर वर्तमान कुछ नीच शक्तियों (जिन्हें हम सुखों की गुलामी भी कह सकते हैं) के नाम बताए जैसे शरीर संबंधी आलस्य, नशा, काम, अहम संबंधी स्वार्थ, मनमर्जी, घमंड, गुस्सा, इनके अतिरिक्त ईर्षा, द्वेष, धन संपति इत्यादि-यह सब आत्मिक या रूहानी रोग हैं और इनसे सारी मानवता त्रस्त है। संसार में जहां देखो मौत के खेल खेले जा रहे हैं। न तो इंसान स्वयं शांति से रहना चाहता है न किसी और को शांति से जीने देना चाहता है। Live And Let Live के शब्द मज़ाक बन कर रह गए हैं। इन गुलामियों ने हमारे इस संसार को नरक का नमूना बना दिया है। भगवान देवात्मा की देव शक्तियों के बल से एक एक आत्मा के जीवन में जो कुछ उच्च परिवर्तन आता है और हमारी इस पृथ्वी पर ही एक स्वर्ग पैदा होता है, वह किसी और तरह से पैदा नहीं हो सकता। यह रोशनी आत्मा के बनने और बिगड़ने के नियमों को दिखाती है अर्थात आत्मा अपने विविध सम्बन्धों में जिस जिस किस्म की नीच गतियों के द्वारा बिगड़ता व विनाश की तरफ जाकर नष्ट होता है, उन गतियों की अत्यंत भयानक, बुरी और विनाशकारी तस्वीर को दिखाती है और जिस जिस किस्म की उच्च गतियों के पैदा करने वाले भावों में विकसित होकर आत्मा उच्च बनता है उसका मनोहर दृश्य आंखों के सामने लाती है, और झूठे और कल्पित मतों की सच्चाई को प्रगट करती है।

डॉक्टर खेड़ा ने श्रोतागनों से पूछा कि क्या बुखार माफ होने की चीज़ है? क्या कैंसर माफ होने की चीज़ है? क्या दिल, किडनी और दिमाग की खतरनाक बीमारियाँ माफ होने की चीज़ हैं? जैसे यह जिस्मानी बीमारियाँ माफ होने की चीज़ नहीं, वैसे ही रूहानी या या आत्मिक बीमारियाँ जो पापों की शक्ल में जाहिर होती हैं वे भी माफ होने की चीज़ नहीं और इसलिए नहीं हो सकतीं। नेचर में कोई ऐसा अमल या क्रिया नहीं जिसका नतीजा पैदा नहीं होता। इन कल्पनाओं के शिकार होकर करोड़ों लोग अपनी हस्ती अर्थात अपनी रूह या आत्मा का खून करते हैं और जाने अनजाने में प्रतिदिन आत्म घात की दुखदायी घटनाएँ घटित होती रहती हैं।

आगे डॉक्टर खेड़ा ने बताया कि कोई परिवर्तन बिना शक्ति के नहीं आ सकता। कोई आत्मा नीच गति की ओर जाता हुआ उस के खिलाफ उच्च शक्ति के प्रयोग के बिना उच्च गति की तरफ नहीं आ सकता। भगवान देवात्मा की ज्योति और शक्ति जैसी अद्वितीय है, वैसे ही उनके कार्य भी अद्वितीय हैं। उन्होंने दो जीवनों में आए आश्चर्यजनक परिवर्तनों से अपनी बात समझाई।

स्वामी गोविंद राम जी, राएपुर रानी के राजा के पुरोहित के भतीजे थे। किसी प्रकार उन्हें भगवान देवात्मा का एक उपदेश सुनने का अवसर मिला। उपदेश सुनने के बाद यह वापिस रायपुर रानी के लिए रवाना हुए। इस से पहले इनका चरित्र बहुत खराब था, नज़रें अपवित्र थीं। रेलवे स्टेशन पर इन्हें एक बहुत आश्चर्यजनक experience हुआ। इनकी नज़र किसी लड़की या स्त्री की तरफ नहीं पड़ रही थी, ऐसा ही experience उन्हें रायपुर रानी आकर भी हुआ जबकि पहले तो वह गलत चिंताएं करने के लिए अपने आपको मजबूर पाते थे। भगवान के एक ही उपदेश ने उनके जीवन में एक अनसुनी क्रान्ति पैदा कर दी। इनके सम्पर्क से एक बहुत घटिया हालत में पहुंचे हुए इंसान को जिनका नाम मिस्त्री वधावा राम जी था, उनके परम पूजनीय भगवान देवात्मा की इसी अद्वितीय ज्योति और शक्ति को पाने का सुअवसर मिला। भगवान के चरणों में आने से पहले वह बदकिस्मती से एक कहलाने वाले धर्म मत को मानते थे जहां मदिरा, मांस, मछली, मैथुन और मुद्रा जैसे महा पाप कर्मों का करना अनिवार्य था। यह इन सब आत्मिक बीमारियों का शिकार और बहुत ऐबग्रस्त हो गए। यह इतने ज़ालिम हो गए थे कि कुल्हाड़े के एक वार से ताकतवर से ताकतवर भैंसे की गर्दन अलग कर दिया करते थे और पशुओं को अपने हाथों से बली चढ़ाने के लिए सदा तैयार रहते थे। इनके जीवन का काँटा ही बदल दिया। उसके बाद से न केवल सारी आयु के लिए इनके पाप कर्म ही छूट गए अपितु इन्होंने अपने जीवन से परोपकार की असाधारण घटनाएँ प्रदर्शित की हैं जिनका वर्णन डॉक्टर खेड़ा ने किया। जिनमें से एक यह थी: एक बार वह किसी जगह से गुज़र रहे थे कि उन्होंने देखा कि कोई अधरंग का शिकार बूढ़ा आदमी एक कोठड़ी में गंदगी में लथपथ पड़ा हुआ था। उसके अपने रिश्तेदार और परिचित जन कोई परवाह नहीं करते थे, मिस्त्री वधावा राम जी से ऐसा दर्दनाक दृश्य देखा नहीं गया। उन्होंने पानी की एक बाल्टी का

इंतज़ाम किया और उस बूढ़े व्यक्ति की साफ सफाई की, उसकी झोंपड़ी को भी झाड़ू से अच्छी तरह साफ किया। इतना घटिया और पापी जीवन रखने वाले इंसान से क्या ऐसी सुंदर परोपकार की घटना पैदा करने की उम्मीद हो सकती है। जी हाँ, परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अलौकिक देव प्रभाव ऐसे अजूबे ही लाते हैं। महा स्वार्थी, महा पापी मिस्त्री वधावा राम जी ने देव समाज की संगत में आकर एक ब्रत ले लिया था कि वह प्रतिदिन निस्वार्थ भाव से बिना बदले में कुछ भी लिए कोई न कोई सेवा का काम अवश्य करेंगे और उन्होंने अपने इस ब्रत को 97 वर्ष की सारी उम्र तक निभाया। चरित्र के विचार से गए गुजरे इस इंसान का चरित्र बहुत उच्च और पवित्र बन गया जिस को देख वा सुन कर हर व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाता था। डॉक्टर सी०एस० जैरथ ने कार्यक्रम के अध्यक्ष थे उन्होंने माननीय वक्ता का बहुत सुन्दर शब्दों में ध न्यवाद किया और उनकी विद्वत्ता और भावों की प्रशंसा की।

<u>महोत्सव का आख़िरी दिन (5 – 12 – 2017)।</u> पहली सभा - 8.30 बजे। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। पहले एक भजन का गान हुआ, छवि द्वारा पूजनीय भगवान का अर्चन, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या हुई।

सभापति जी ने फरमाया कि महोत्सव पर हमें सुन्दर दृश्य देखने को मिले। एक सेवक ने बताया कि सभा में श्रद्धेय श्रीमान कनल जी की एक पति पत्नी की घटना से मैं बहुत प्रभावित हुआ, उन्होंने कहा कि मैं भी अपनी पत्नी के सम्बन्ध में अपना व्यवहार बदलूंगा और अपनी पत्नी की दिल से सेवा करूंगे। सभापति जी ने बताया कि मेरा हृदय भी भगवान के चरणों में झुकता रहा और धन्यवाद देता रहा। देवात्मा के दर पर आना और उनके देव प्रभावों को पाना मनुष्य का बहुत बड़ा सौभाग्य है। यहां आकर मनुष्य के बुरे व्यवहार उच्च व्यवहारों में बदल जाते हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने फरमाया था कि भगवान की शरण में आना उनके लिए दोनों जहान के सौभाग्य के समान है। भगवान की शरण में आने का जिन जनों को सौभाग्य मिल रहा है, उन्हें मुबारकबाद कहता हूं। उन्हें अपने सौभाग्य की अधिक से अधिक समझ आ सके।

श्रीमान नरिन्द्र सिंह जी मेरठ की सपुत्री निकिता जी, जो इंगलिश की एम.ए. हैं और मुकेश जी चावला (पदमपुर) और उनकी धर्म पत्नी रजनी चावला को सेवकी में ग्रहण किया गया। मुकेश जी चावला के पिता की विरोधता के बावजूद उन्होंने इस सौभाग्य को पाने का निर्णय लिया।

विजय पताका के नीचे खड़े हुए इन सौभाग्य वान जनों को प्रतिज्ञाएं करवाई गई कि हमारी प्रतिज्ञाएं चार प्रकार की है: -

(1) भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में - मूल वाक्या
(2) दुराचारों के सम्बन्ध में (8 प्रतिज्ञाएं)
(3) सदाचार के सम्बन्ध में (4 प्रकार की प्रतिज्ञाएं)
(4) नियत दान के सम्बन्ध में।

इसके बाद उन सौभाग्यवान जनों के गले में फूलों की मालाएं पहनाई गई और उनकी सेवकी की खुशी में बहुत सारे जनों ने दान दिया।

इसके बाद भाव प्रकाश की सभा की गई।

इसके सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे। उन्होंने सारे 4 दिन के प्रोग्रामों के विषय में संक्षेप में बताया और फरमाया कि मनुष्य नीच भावों के हाथों बेबस है। इन देव प्रभावों में आकर उसे कुछ न कुछ सोझी मिलती है और उसके व्यवहार बदलते हैं।

फिर भाव प्रकाश करने के लिए उपस्थित जनों को प्रेरणा की गई।

भाव प्रकाश

श्रीमान जगजीत सिंह जी (लुधियाना) मुझे महोत्सव पर आकर बहुत लाभ हुआ है, अपनी कमियां नज़र आई हैं। दूसरों के गुणों को देखने की ओर ध्यान गया है। गुरू की कृपा से कई छोटे छोटे भलाई के काम करता हूं। एक कर्मचारी का डाक्टरी ईलाज करवाया। एक को पढ़ाने के लिए अध्यापिक रखा। गरीब बच्ची की स्कूल ओर कालिज की फीस दी। अब वह M.Com कर रही है। यह सब गुरू के देव प्रभावों के कारण सम्भव हो सका है। आगे वह यथा शक्ति भगवान के कारज में लगे रहेंगे।

मुकेश जी चावला (नये सेवक, पदमपुर) उनकी नई नई शादी हुई है, उन्होंने कहा कि सेवक बनकर जो मुझे खुशी हुई है, वह अपनी शादी पर भी नहीं हुई थी। मेरा नया जन्म हुआ है। बड़ों का सम्मान करने का भाव जगा है।

राजेन्द्र जी (देहरादून) उन्होंने कहा कि मेरा जो कुछ भी है, वह सब भगवान का दिया हुआ है। मुझे मेरी धर्म पत्नी और बच्चों के उपकार नज़र आते रहे हैं। मेरी धर्म पत्नी बहुत ही नेक है। मेरे कठिन समय में उसने सदा मेरा साथ दिया। अपनी धर्म पत्नी से बहुत सेवा पाई है, उन्होंने कहा कि गुरू के दर के बिना मेरा तो बिल्कुल ही कोई ठिकाना नहीं। मेरा बचे रहना इसी वातावरण में सम्भव है।

ओम प्रकाश जी आदर्श ने गुरू की महिमा की एक कविता गाकर सुनाई।

रमेश जी (निवासी देव आश्रम) उन्होंने बताया कि यहां का वातावरण बहुत निराला है। मुझे अपने नीच जीवन का कुछ ज्ञान मिला है। उन्हें देव प्रभावों को पाकर मिटाना है और उच्च भावों को पैदा करना है, ऐसी प्रेरणाएं मिली हैं।

श्रीमान प्रिंसीपल दीवान जी (गंगानगर) मुझे भगवान की शरण में आए दो वर्ष हो गए हैं। मुझे शिक्षा को गहराई से समझने में समय लग रहा है। केवल किताबें पढ़ने से लाभ नहीं होता। यहां आकर आत्म - अवलोकन किया, अपनी गुज़री हुई जिन्दगी, जो लगभग बर्बाद कर रही थी उस पर विचार किया। इन प्रभावों ने मेरे व्यवहार बदले हैं। मुझे आत्मा के विषय में ज्ञान मिला है, कुछ होश आई है। मैं समाज के काम में समय ओर पैसे से सहयोग करूंगा।

सिद्धार्थ जी (पुत्र चमन लाल जी, मुहाली) मेरे माता पिता समाज से जुड़े हुए हैं। माता - पिता के उपकारों का ब्यान किया, कि हमें उन्होंने अच्छे वातावरण में पाला है। मुझे और मेरी बहन को पढ़ाने में उन्होंने बहुत सख्त मेहनत की है। उसी कारण हम मोटी बुराईयों से बचे हुए हैं। हम ऐसी समाज को कभी नहीं छोड़ेंगे। इन सभाओं में आकर बार बार अपना सौभाग्य अनुभव होता रहा है।

हरदेव सिंह जी (केसूपुरा) गुरू की कृपा

से मेरी नज़र पहले से पवित्र हो गई है।

जलधर जी पंचकूला: – मुझे सभाओं में बहुत लाभ हुआ है, मैं दूसरों को घृणा करने से बचूंगा, माता पिता के उपकार नज़र आए हैं, दूसरों की सहायता करने का यत्न करूंगा, भगवान देवात्मा के साहित्य को पढ़ूँगा।

जगीर सिंह जी (केसूपुरा) उन्होंने बताया कि महोत्सव पर आकर बहुत खुशी हुई। बहुत लाभ भी हुआ, अपने नीच भाव कुछ दबे हैं। महोत्सव के दिनों में भगवान देवात्मा की वाणी का पाठ करता रहा हूं। उन्होंने बताया कि पहल बातें अच्छी नहीं लगती थी, अब अच्छी लगने लगी हैं।

गोपाल कृष्ण (आँखों देखी): – महोत्सव का प्रोग्राम बहुत प्रभावशाली रहा। बहुत अच्छा मण्डल बना। खान पान का प्रबन्ध भी बहुत अच्छा था। कई जनों ने बाद में अपने लाभ को लिखकर दिया।

एक जन ने गुरू के अमृतमयी प्रभावों को पाकर ब्यान किया "संगत में आने से पहले मेरे नीच आकर्षण की हालत यह थी कि जैसे एक कुत्ता लार टपकाता रहता है वैसे ही मेरी हालत थी कि जब भी लड़कियों की तरफ देखता था मेरी काम वासना की नीच चिन्ताएँ चलती थी, कोढ़ की तरह यह चिन्ताएँ पीछा नहीं छोड़ती थी दुख भी होता था परन्तु बेबस था गुरू के असरों में रह कर इस अवस्था से बहुत बड़ा आराम मिला है, दिल में ठण्डक फील होती है परन्तु इसके सूक्ष्यांश जो भी बकाया है उस पर भी बहुत दुख होता है उपाय बताएं....।

* एक और जन ने अपनी पत्नि के बारे में अपने व्यवहार को बताया मैने एक बार सभाओं में श्रद्धेय श्रीमान पी.वी. कनल जी कि उस घटना के बारे में सुना कि वह किसी बुजुर्ग फैमली के घर प्रचार करने गये थे वहाँ पर वह उस बजुर्गों दम्पति का एक दूसरे के प्रति प्रेम, सन्मान और सहयोग – समर्पण को देखकर झुक गये, और प्रभावित हुए, सभा की इस घटना से मेरे अन्दर की गति बदल गई। मुझे याद आ गया कि मेरी पत्नि बिमार रहकर भी घर के सारे काम करती रहती है और इन कामों के बाद इनकी बिमारी और बढ़ जाती है। मैं उन बुजुर्ग की तरह बाहर से खाना मंगवाकर तो नहीं ला सकता, परन्तु कुछ तो कोशिश कर ही सकता हूँ तब से मैंने खाना बनाना शुरू किया और अब लगभग सारे काम में खुद ही करता हूँ और उसकी सेहत, आराम का ध्यान रखता हूँ।

* एक जन ने सभी केअपने विषय में विचारों को बताया कि मुझे ठीक समझते हैं परन्तु मैं नीच हूँ, गलतियाँ होती रहती हैं, मुझे बल मिले।

* एक और उमरदराज जन ने प्रभाव मिलने पर यह ब्यान किया कि : – मैं देवसमाज को नहीं जानता, कोई तवज्जो भी नहीं देता परन्तु मुझ पर असर कमाल के हुए हैं मैं पराई लड़कियों को बड़े शौंक से देखता था, नीच ख्यालात चलते थे, भूखे की तरह देखता था परन्तु न जाने कैसे असर हो गये हैं, मैं बहुत बच गया हूं। दिल इस पहलू में बहुत आराम की हालत में हो गया हूं।

* एक जन ने बयान किया: – मैं शराब, सिगरेट आदि नशों का भयँकर गुलाम था। गुरू वे बचा लिया उसमें में पूरा फंस चुका था उस अवस्था में मेरी पत्नि

ने मेरा साथ दिया, मेरा ख्याल रखा मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी माँ बनकर मुझे पाल रहीं थी अब मैं वफादारी निभाऊँगा गुरू असरों के मिलने के बाद मेरा पूरा परिवार ठीक हालत में आ रहा है, बच्चे पढ़ लिख गये हैं, घर में बरकते हैं।

* एक नौजवान का बयान:- मेरे माता पिता दोनों देवसमाज में आने से हमारा बहुत भला हुआ है, हमारे परिवार में शराब व मांसाहार बहुत जोरदार था उससे बच गये। उसके बाद हम भाई बहनों को पढ़ाया लिखाया गया जिस तरह और कालेज के विद्यार्थियों में आम बुराईयाँ आ जाती हैं अच्छे वातावरण में आने से हम उनसे बचे हुए हैं हमारा परिवार बहुत सुखी है, मेरे माता पिता को धन्यवाद, सबको धन्यवाद। और भी कई जन अलग अलग पक्षों में उच्च असर पाते रहे....।

इसके बाद सभापति जी ने सब धर्म सम्बन्धियों का महोत्सव पर आने के लिए धन्यवाद किया। उच्च परलोक वासी धर्म सम्बन्धियों का धन्यवाद किया, जिन्होंने महोत्सव को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है। धर्म सम्बन्धियों की सेवाओं और सब तरह से सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

इसके बाद देव आरती का गान और जय ध्वनि के साथ यह सुन्दर और उपयोगी पर्व समाप्त हुआ।

एक हाजरीन

शुभ संदेश

"सत्यदेव की जय"

पूजनीय भगवान देवात्मा का 167वां शुभ जन्मदिन 4 दिसम्बर को मनाए जा रहे महोत्सव के शुभ अवसर को सब के सन्मान के साथ बहुत बहुत बधाई व मंगल कामनांए।

इस पावन महोत्सव को मनाने का मकसद भगवान देवात्मा के बताए व अपनाए गए रास्ते जैसे "बुराइयां व मिथ्या विश्वास को दूर करना" एवं आत्मा के सही व सत्यस्वरूप को जानना व उस के विकास के लिए प्रयत्न प्रयास व अभ्यास करना है। हम सब इन असूलों पर चलने का संकल्प लें।

इस शुभ कार्य में "देवात्मा" का तेज प्रकाश न केवल सहायक होगा बल्कि हम सबको इसे पूरा करने में प्रेरणा प्रोत्साहन, प्रबल इच्छा व पुरषार्थ प्रदान करते हुए हमें शुभ जीवन प्रदान करेगा।

स्वस्थ ठीक न होने के कारणा मेरा इस पुण्य, पावन व पवित्र महोत्सव में शामिल होना मुमकिन नहीं हो सका, जिस के लिए क्षमा याचना करता हूं।

प्रार्थी

शान्ति मोहन मदान

शुभ संग्राम

मल्लेका सिरसा:- चण्डीगढ़ से चलकर श्रीमान बलदेव सिंह जी 28 अक्तूबर को मल्लेका पहुँच गए। वहां मान्दिर की धर्म सम्बन्धियों ने बहुत अच्छी तरह सफाई करके रखी थी। उसी साम को 8 बजे सभा रखी गई।

सभापति श्रीमान बलबहादर सिंह जी:- देव प्रभावों की महिमा को बताते हुए सभापति जी ने बताया कि किस प्रकार देव ज्योति और देव तेज के द्वारा भयानक मिथ्या विश्वासों और पापों से मोक्ष प्राप्त होती है। देव प्रभावों के द्वारा किस प्रकार अपनी नीचताएं, कमीयां, बेईमानियां, चोरियां आदि दिखाई देती हैं और उनका परिशोध करने के लिए एक एक जन मजबूर हो जाता है।

29 – 10 – 2017 सुबह 9 बजे:- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि गुरू महाराज ने ही हमें बताया है कि हर वस्तु में प्रति क्षण परिवर्तिन हो रहा है। हमारे भाव वा हमारे स्वभाव भी हर बदल परिवर्तत हो रहे हैं। सभापति जी ने हम सब में आ रहे परिवर्तन के बारे में सुचेत किया। सभा से उठकर एक सेवक बेबस होकर कहने लगा कि संगत के बिना मैं नीच बनने को तैय्यार था। श्रीमान जी ने पूछा कि क्या कोई प्रतिज्ञा तोड़ तो नहीं दी। तो उन्होंने बताया कि टूटी तो नहीं, परन्तु यदि संगत न आती तो टूट जाने का ख़तरा अवश्य था।

29 – 10 – 2017 शाम 7:30 बजे सभापति बलबहादुर सिंह जी:- उन्होंने बताया कि नेचर के चारों जगतों में नियम काम करते हैं। यह भी एक नियम कि संगत में आने से हमारे परिवारों में अन्मेल घटता है। अपने नीच भावों का कुछ बोध पैदा होता है। स्वार्थ के कारण जो दुखदाई दृश्य पैदा होते हैं, उनके बहुत से उदाहरण पेश किए। अपने अंह अनुराग की घृणित लीला का भी ब्यान किया। ऐसे गुरू का मिलना अपना बहुत बड़ा सौभाग्य बताया।

30 – 10 – 2017 सुबह 9 बजे,सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: - सभापति जी ने फरमाया कि मनुष्य की प्रबल इच्छा सुख प्राप्ति है। यह इच्छा सच्चे धर्म की प्राप्ति से ही पूरी होती है सच्ची संगत के बिना मनुष्य को अपनी ईर्षा, द्वेष और नीच घृणा का ज्ञान नहीं होता। ईर्षा वा नीच घृणा से क्या भयानक लीला पैदा होती है उसकी बहुत स्थूल घटनाएं बताई। ईसा - मसीह की शिक्षा, Love Thy enemy, Love your neighbour की सुन्दर व्याख्या की। कैसे प्रियंका गांधी ने अपने बाप के कातिल से मुलाकात करके उसको क्षमा कर दिया। यह सभा से नीच घृणा से बचने की ज़ोरदार प्रेरणाएं मिली।

30 - 10 - 2017 रात बजे, सभापति जी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी:- सभापति जी ने बताया कि मनुष्य को उसकी सुख लालसाएं चलाती हैं। सुख अनुराग अपनी गुलामी से क्या लीला पैदा करते हैं, उसकी सच्ची घटनाएं पेश की।

31 – 10 – 2017, 9 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिहं जी ने बताया विद्या प्राप्ति बहुत कीमती है। उस के लिए स्कूल कालिज की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार नीच सुख अनुरागों से बचने और उच्च जीवन पाने के लिए अच्छी संगत की आवश्यकता है। प्रतिज्ञाओं पर पक्के रहने, दूसरा संगत करना, तीसरा कोई न कोई चारों जगतों की सेवा करना, हमें उच्च जीवन में विकसित करता है। इसकी कई उदाहरणें पेश की।

यह यहां पर आख़री सभा थी। सारा संग्राम काफी सफल रहा और प्रेरणा दायक रहा।

गोनियाना मण्डी यहां 31 – 10 – 2017 को शाम को एक सभा की गई है। जो श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने आजकल जगह जगह जो धार्मिक साधन किए जाते हैं, वह मनुष्य को बेहतर बनाने में असफल हैं। परन्तु परम पूजनीय भगवान ने जो धर्म की स्थापना की है, वह मनुष्यों को पाप, मिथ्या से निकाल कर उन्हें नेक इन्सान बनाता है और उनके सम्बन्धों में सुधार करता है। सैंकड़ों, हज़ारों जनों को ऐसा नेक जीवन प्रदान किया है।

1 – 11 – 2017, इस सभा में अन्धेरे के ख़ौफनाक परिणाम बताए। मनुष्य के भीतर अपने मित्र, दुश्मन और जीवन के सत्य लक्ष्यं सम्बन्धी भी अन्धेरा है। कोई धर्म मनुष्य को यह अन्धेरा नहीं दिखाता। मनुष्य का सच्चा लक्ष्य अपनी जीवनी शक्ति का ज्ञान पाना वा उसको नाश से बचाकर उसका उच्च जीवन में विकास करना है। पर के विकास में हमारा विकास है। यह सभा बहुत लाभदायक सिद्ध हुई।

1 – 11 – 2017 रात 8 बजे की सभा में मनुष्य को बनाने वा बिगाड़ने में उसकी विरासत और बिगाड़ने का महत्वपूर्ण रोल है। इसको उदाहरणों द्वारा बहुत साफ साफ समझाया गया।

यहां सेवकों का श्रद्धावानों ने इन सभाओं से अच्छी प्रेरणाएं ली।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने 7 – 8 दिन का दौरा थराजवाला, पदमपुर और गंगानगर का किया। वहां पर प्रतिदिन दो सभाएं होती रही जो जीवन के विविध विषयों पर थी। नीच जीवन से क्या फल पैदा होते हैं, नीच भावों का ज्ञान देने का प्रयत्न किया गया। उच्च भावों को पैदा करने और कौन कौर से उच्च भाव मनुष्य को उच्च बनाते हैं उनका ब्यान किया गया सम्बन्धों को कैसे सुखी और सार्थक बनाया जा सकता है, उसके विषय में सभाओं में चर्चा हुई।

खुशी की बात है कि पदमपुर और गंगानगर में कुछ बहुत उत्साही सेवक हैं, जो अपने तौर पर भी समाज की शिक्षा को फैलाने का यत्न करते रहते हैं। किताबे लोगों को देने का भी काम होता है। परमपुर में डाक्टर मुन्शा सिंह जी हररोज़ सभा करते हैं, जिससे कोई न कोई अधिकारी जन अवश्य लाभ उठाता है।

एक सेवक

'टॉक्सिक बिहेवियर' संबंधों के लिए बुरा

आप भले ही दूसरों के साथ हमेशा खराब व्यवहार (टॉक्सिक बिहेवियर) करते हों या फिर कभी-कभी ऐसा करते हैं, लेकिन इसके प्रभाव हमेशा एक जैसे होते हैं। लोग आपसे दूर जाने लगते हैं। संबंधों के साथ आपकी प्रोफेशनल व पर्सनल ग्रोथ बुरी तरह प्रभावित हो जाती हैं। इससे बचने के लिए जरूरी हैं ये उपाय:-

ईर्ष्या न करें

दूसरों से ईर्ष्या हमेशा खुद के लिए अभिशाप साबित होती है। इस व्यवहार में प्रशंसा योग्य कुछ नहीं होता। इसलिए अपनी उपलब्धियों की तुलना दूसरों से करने से बचें। यह कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है। यदि आपकी किसी से प्रतिस्पर्धा है तो खुद से है। अगर आप अपनी प्रगति के बारे में जानना चाहते हैं तो यह देखें कि कल आप क्या थे।

हर बात को खुद से न जोड़ें

कुछ लोग होते हैं, जो यह सोचते हैं कि उनके इर्द-गिर्द होने वाली घटनाएं उन्हें व्यक्गित रूप से नुकसान पहुंचाने के लिए हैं। जबकि आपके बारे में लोगों की राय उनके अनुभवों और विचारों के आधार पर होती है। इसलिए वे आपके बारे में क्या अच्छा-बुरा सोचते हैं, उस पर ध्यान न दें। अपनी समझदारी और अनुभवों के आधार पर काम करें।

नकारात्मकता से बचें:

कुछ लोग जीवन में हो रही घटनाओं के सकारात्मक पहलू को देखना ही नहीं चाहते। वे हमेशा यहीं सोचते रहते हैं कि उनके लिए सबकुछ खराब ही होने वाला है। इससे वे खुद और दूसरों को परेशान करने के अलावा कुछ नहीं करते। इसलिए विकट परिस्थित में भी हमेशा सकारात्मक सोच बनाए रखें।

तुरंत आवेश में न आएं

अपनी भावनाओं पर काबू न पाना भी दूसरों के साथ गलत व्यवहार है। छोटी छोटी बातों पर आपका गुस्से से फट पड़ना, आंसू बहां दूनी समस्या ही पैदा करता है। इसलिए किसी भी बात पर प्रतिक्रिया देने से पहले उसकी जड़ तक जाएं। उसके कारणों को समझें और फिर शांत तरीके से अपनी बात रखें। इससे न तो बात बढ़ेगी और न ही आपके संबंध खराब होंगे।

अपनी सच्चाई न छिपाएं

अपनी झूठी छवि से लोगों को जोड़ना काफी नुकसानदायक साबित हो सकता है। सच पता चलने पर लोग झूठा समझकर आपसे दूरी बना लेंगे। यह मायने नहीं रखता कि आपकी उम्र जाति और प्रोफेशन क्या है। आप जो हैं वही रहें। बस खुद में सुधार लाने की कोशिश जरूर करें। हर व्यक्ति आपसे जुड़ेगा।

सत्संग के अवसर

(1) 7 जनवरी 2018 इतवार माता-पिता सम्बन्धी फंकशन खेड़ा इन्सटीच्यूट द्वारा
(2) संगरूर सत्संग 16,17,18 फरवरी 2018 शुक्र, शनि और इतवार
(3) कल्याण सत्संग 23,24,25 फरवरी 2018 शुक्र, शनि, इतवार

-मन्त्री

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक सोलह साधनों की तालिका सन 2018 ई०

5 जनवरी शुक्रवार	माता पिता और सन्तान के सम्बन्ध में
22 जनवरी सोमवार	भाई बहनों के सम्बन्ध में
9, 10, 11 फरवरी शुक्रवार, शनिवार, इतवार	देव समाज के सम्बन्ध में
2 मार्च शुक्रवार	पति पत्नी के सम्बन्ध में
18 मार्च इतवार	उद्भिद् जगत के सम्बन्ध में
1 अप्रैल इतवार	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में
29 अप्रैल इतवार	वंशीय जनों के सम्बन्ध में
25 मई शुक्रवार	स्वदेश के सम्बन्ध में
27 जुलाई शुक्रवार	साथी सेवकों के सम्बन्ध में
24, 25, 26 अगस्त शुक्रवार, शनिवार, इतवार	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में
17 सितम्बर सोमवार	पशु जगत के सम्बन्ध में
9 अक्तूबर मंगलवार	परलोक के सम्बन्ध में
19 अक्तूबर शुक्रवार	स्वजाति के सम्बन्ध में
7 नवम्बर बुधवार	भौतिक जगत के सम्बन्ध में
23 नवम्बर शुक्रवार	मनुष्य मात्रा के सम्बन्ध में
21, 22, 23 , 24 दिसम्बर शुक्रवार, शनिवार, इतवार, सोमवार	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के जन्म दिन के सम्बन्ध में महा उत्सव
23 दिसम्बर इतवार	विशेष दिन

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts